प्रेस विज्ञप्ति

23 अप्रैल 2020

देश के प्रमुख व अग्रणी मुसलिमों ने बनाया एक राष्ट्रीय थिंक टैंक — इंडियन मुसलिम्स फ़ार प्रोग्रेस ऐंड रिफ़ार्म्स (इम्पार)

नयी दिल्ली। देश की दो सौ से अधिक अग्रणी मुसलिम हस्तियों ने एक राष्ट्रीय थिंक टैंक 'इम्पार' यानी 'इंडियन मुसलिम्स फ़ार प्रोग्रेस ऐंड रिफ़ार्म्स' की स्थापना की है। देश की मुसलिम आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसे मुसलमानों का है, जो प्रगतिशील और आधुनिक विचारों के हैं, लेकिन आमतौर पर ऐसे मुसलमान मुखर तौर पर सामने नहीं आ पाते। वह विभिन्न मसलों पर वाक़ई क्या सोचते हैं, यह पता नहीं चल पाता क्योंकि ऐसे मुसलमानों की अब तक कोई आवाज़ नहीं थी। इसलिए देश के मुसलिम समाज के इस बहुसंख्य तबक़े की सामूहिक आवाज़ और रचनात्मक सोच को सामने लाने के लिए अब इस थिंक टैंक 'इम्पार' की स्थापना की गयी है।

इस थिंक टैंक में कई प्रमुख मुसलिम राजनेता, सिविल व पुलिस सेवा के कई बड़े पूर्व अफ़सर, कई जाने-माने पत्रकार, कारपोरेट व उद्योग जगत से जुड़ी मुसलिम हस्तियाँ, शिक्षाविद्, सैन्य अधिकारी, फ़िल्म-लेखक, डॉक्टर, वकील और समाजसेवी शामिल हैं। इनमें राज्यसभा के पूर्व उपसभापति के. रहमान ख़ान, पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त डॉ. एस. वाई. क़ुरैशी, पूर्व मंत्री तारिक़ अनवर व रोशन बेग, इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर के अध्यक्ष सिराज क़ुरैशी, ब्रिगेडियर सैयद अहमद अली, पूर्व विशेष पुलिस आयुक्त ए. ए. ख़ान, सीआरपीएफ़ के पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक आफ़ताब ख़ान, पूर्व आईएएस अफ़सर डॉ. अनीस अन्सारी, एम.एच. ख़ान, सलाउद्दीन अहमद, शिक्षाविद् पी. ए. इनामदार व एस. डब्ल्यू. अख़्तर, प्रमुख पत्रकार सईद नक़वी, क़मर वहीद नक़वी, क़मर आग़ा, शाहिद सिद्दीक़ी, सीमा मुस्तफ़ा, सबा नक़वी, लेखिका शीबा असलम, उद्योगपति सईद शेरवानी व जुनैद यूसुफ़, कॉरपोरेट जगत से सिराज चौधरी व रियाज़ नक़वी, चिन्तक डॉ. ज़फ़र महमूद, डॉ. अबू सालेह शरीफ़, एम. एम. अन्सारी, फ़िल्म जगत से जुड़े हसन कमाल, एजाज़ ख़ान, आतिक़ा फ़ारूक़ी, प्रमुख वक़ील फ़िरोज़ ग़ाज़ी, एम. ताहिर, महमूद मेहदी और समाजसेवी आमिना शेरवानी, अरशद सिद्दीक़ी व पाशा पटेल आदि के नाम प्रमुख हैं।

यह थिंक टैंक देश के शिक्षित व आधुनिक मुसलिम तबक़े के विचारों का प्रतिनिधित्व करेगा और दूसरे बाक़ी सभी समुदायों और मीडिया के साथ वैचारिक विमर्श में भागीदार बनेगा और भारत के सेकुलर, बहुलतावादी और समावेशी सामाजिक तानेबाने को पल्लवित करने में सक्रिय भूमिका निभायेगा। 'इम्पार' आशान्वित है कि अपने कार्यक्रमों व ज़मीनी स्तर पर उसके निरन्तर प्रयासों से वह मुसलिम समाज व देश के भीतर एक रचनात्मक बदलाव ला पाने में सफल होगा।

भारत का मुसलिम समाज अकसर नकारात्मक कारणों से ख़बरों के केन्द्र में आता रहा है। मुसलिम समाज में शिक्षा की कमी व आधुनिक संसार के साथ उसके सीमित विनिमय के कारण भारतीय मुसलमानों का एक वर्ग आधुनिक समय की स्थितियों व चुनौतियों के अनुसार अपने आपको ढाल नहीं सका है। 'इम्पार' मुसलिम समाज को आधुनिक शिक्षा से लैस करने की

रणनीति और साझा सांस्कृतिक मूल्यों को रेखांकित करने की योजना को लेकर आगे बढ़ेगा ताकि देश का मुसलिम समाज राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में अपना और अधिक योगदान कर सके।

मुसलमानों का एक बड़ा हिस्सा आज भी अच्छी शिक्षा से वंचित है और इस कारण सामाजिक व आर्थिक अवसरों के मामले में वह काफ़ी पिछड़ा हुआ है। उन्हें बेसिक शिक्षा भी हासिल नहीं, साथ ही दयनीय आर्थिक स्थिति, सामाजिक तौर पर असुरक्षा की भावना के अलावा समय-समय पर हुए कुछ नीतिगत निर्णयों ने कुल मिला कर उन्हें सामाजिक प्रगति के हाशिये पर धकेल दिया। 'इम्पार' का मानना है कि भारत के मुसलिम समुदाय की दशा में सकारात्मक परिवर्तन तभी आ सकता है, जब एक तरफ़ तो समुदाय के भीतर आन्तरिक सुधारों की प्रक्रिया की शुरूआत हो, वैज्ञानिक रुझान व तार्किक चिन्तन पर ज़ोर हो और उचित सामाजिक व राजनीतिक वातावरण उन्हें मिले तथा दूसरी ओर उन्हें शिक्षा व आर्थिक प्रगति के उचित अवसर भी मिलें।

हाल के दिनों में ऐसा देखा गया है कि मुसलिम समुदाय का मीडिया के साथ विमर्श बहुत ही ख़राब रहा है और स्वयंभू मौलाना या जाहिल क़िस्म के लोग टीवी चैनलों पर मुसलमानों के प्रतिनिधि के तौर पर बैठ कर असंगत, असन्तुलित और वाहियात बातें करते रहे हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि मुसलिम समुदाय की बात, मुद्दे और चिन्ताएँ सही तरीक़े से नहीं पेश की गयीं और धीरे-धीरे मुसलिम समुदाय को लेकर एक नकारात्मक आख्यान रच दिया गया और उनकी एक बिलकुल ग़लत छवि बना दी गयी। 'इम्पार' ने मीडिया के लिए मुसलिम समाज के विद्वत वर्ग की प्रमुख हस्तियों का अपना पैनल तैयार किया है ताकि मीडिया विमर्श में मुसलमानों का पक्ष विवेकपूर्ण व तर्कसंगत तरीक़े से सामने आये।

'इम्पार' के संयोजक एम. जे. ख़ान ने बताया कि 'देशव्यापी लॉकडाउन के मौजूदा हालात में 'इम्पार' का तात्कालिक लक्ष्य मुसलिम समुदाय के बीच फैली ग़लत धारणाओं का निराकरण कर उन्हें क़ानून का पालन कर स्वास्थ्यकर्मियों व अन्य एजेन्सियों को सहयोग देने के लिए प्रेरित करने का होगा ताकि कोविड -19 के विरुद्ध जंग जल्दी से जल्दी जीती जा सके। अपने विभिन्न कार्य-समूहों व प्रमुख सदस्यों के ज़रिये 'इम्पार' विभिन्न एनजीओ, संस्थाओं व व्यक्तियों के साथ तालमेल कर लोगों को भोजन व अन्य ज़रूरी सामान मुहैया कराने व लोगों को उदारतापूर्वक धन दान करने के लिए प्रेरित करने में जुटा है।'

मुसलमानों के विकास के रास्ते में क्या अवरोध हैं और वे क्यों अवसरों से वंचित रह जाते हैं, इस बारे में सरकार, मीडिया, नीति-निर्माताओं और राजनीतिक वर्ग में बेहतर समझ विकसित हो, इसके लिए ज़रूरी है कि सामाजिक-आर्थिक शोध, संवाद और नीति-निर्माण के मामलों में मुसलिम पक्ष को प्रभावी तौर पर प्रस्तुत करने के लिए मुसलिम समुदाय के पास अपना एक सक्षम फ़ोरम हो। देश में मुसलमानों की स्थिति में सुधार व उनकी रचनात्मक भागीदारी को बढ़ाने के लिए ऐसा फ़ोरम ज़रूरी है, जो मुसलिम समाज के भीतर आन्तरिक सुधारों की प्रक्रिया शुरू करे, साझा मूल्यों और राष्ट्रीय लोकाचार को साथ लेकर चलते हुए नीतियों में बदलाव के लिए मुसलिम पक्ष के दृष्टिकोण को सामने रखे और देश के मीडिया के साथ विमर्श में शामिल हो।

क्या है 'इम्पार' यानी इंडियन मुसलिम्स फ़ार प्रोग्रेस ऐंड रिफ़ार्म्स

विभिन्न क्षेत्रों से देश के 200 से ज़्यादा अग्रणी मुसलमानों द्वारा स्थापित इंडियन मुसलिम्स फ़ार प्रोग्रेस ऐंड रिफ़ार्म्स यानी 'इम्पार' राष्ट्र और समाज में मुसलिम समुदाय की भागीदारी में सकारात्मक और अर्थपूर्ण बदलाव के लिए समाज के सभी वर्गों के सक्रिय सहयोग और समर्थन का इच्छुक है। महात्मा गाँधी ने कहा था,'हम अपने भीतर वह बदलाव लायें, जैसा बदलाव हम दुनिया में देखना चाहते हैं।' राजनीति, अफ़सरशाही, कॉरपोरेट, उद्योग- व्यापार व अर्थ जगत, पत्रकारिता, शिक्षा, विज्ञान, नीति-निर्माण, कला-संस्कृति और लोक-सेवा जैसे विभिन्न क्षेत्रों की अग्रणी व प्रमुख मुसलिम हस्तियाँ 'इम्पार' में शामिल हैं।

मुख्य उद्देश्य

भारतीय मुसलमानों के सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक मुद्दों, नीतिगत मामलों, और समाज में मुसलमानों की छवि जैसे मुसलमानों से जुड़े तमाम मसलों पर विचार के लिए एक थिंक टैंक के रूप में कार्य करना, इन मामलों का गहराई से अध्ययन कर सुधार और प्रगति के उपायों पर राष्ट्रीय स्तर पर संवाद और तालमेल स्थापित करना, समाज के विभिन्न वर्गों, नीति-निर्माताओं, सरकार, मीडिया, अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक-राजनीतिक संगठनों, वैचारिक समूहों के साथ अर्थपूर्ण संवाद स्थापित करना 'इम्पार' के मुख्य उद्देश्य हैं। इसके साथ ही मुसलिम समुदाय में शिक्षा के प्रचार-प्रसार, तर्कसंगत सोच व वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित कर, साझा सांस्कृतिक मूल्यों व राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देकर मुसलिम समाज में सकारात्मक सुधारों की गति को तेज़ कर आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में उन्हें आगे बढ़ाना भी 'इम्पार' का एक अन्य महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है।

उद्देश्य

- मुसलिम समुदाय के बारे में विभिन्न सरकारों के निर्णयों, सामाजिक-आर्थिक व नीति-विषयक मामलों व सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए चलने वाले प्रमुख कार्यक्रमों में मुसलमानों की भागीदारी आदि विषयों पर अध्ययन कर देश में मुसलमानों की सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक स्थिति व प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना और उसके निष्कर्षों को सरकार, मीडिया व सम्बन्धित कार्यसमूहों के समक्ष प्रस्तुत करना।
- मुसलमानों के बारे में मीडिया कवरेज व सामाजिक, आर्थिक और नीति-विषयक वातावरण का अध्ययन व विश्लेषण करना, जिसका प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव मुसलिम समाज की सलामती पर पड़ता है। इसके अलावा आम मुसलमानों में सुरक्षा की भावना, उनकी छवि और उन्हें उपलब्ध अवसरों पर चर्चा करना और इन मुद्दों पर उभरे सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्यों के प्रति मुसलमानों के नज़रिये को स्पष्ट रूप देना और सरकार व मीडिया के सामने उसे रखना।
- केन्द्र व राज्य सरकारों के विभिन्न मंत्रालयों, राजनीतिक दलों, तमाम सामाजिक व बौद्धिक समूहों व मीडिया को मुसलमानों से जुड़े तमाम विषयों पर संवेदनशील बनाने का प्रयास करना ताकि वे मुसलमानों से जुड़े मुद्दों के सारे पहलुओं को बेहतर ढंग से जान कर अपनी राय बना सकें। पत्रकारिता, विधि, स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग-व्यापार, राजनीति, विधायिका आदि में कार्यरत मुसलिमों का डेटा बेस तैयार करना।
- तमाम सरकारी-ग़ैरसरकारी संगठनों, विकास के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं, समाज के तमाम अन्य वर्गों के संगठनों, देश के शीर्ष वैचारिक समूहों, सामाजिक व राजनीतिक नेतृत्व व मीडिया के साथ सलाह-मश्विरा, सेमिनार, चर्चा, विचार-विमर्श आदि कर उन्हें मुसलिम समुदाय के मामलों के प्रति बेहतर ढंग से अवगत कराना।

- मुसलिम युवाओं में शिक्षा को बढ़ावा देना, तर्कसंगत व वैज्ञानिक दृष्टिकोण को पल्लवित करना, क़ानून व राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रति और अधिक आदर भाव के प्रति जागरूक करना, साझा सांस्कृतिक-राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति चेतना विकसित करना और मुसलिम समाज में समाजसेवा को बढ़ावा देना और मुसलिम समुदाय में 'दिखावे के इसलाम' के बजाय 'इस्लाम के वास्तविक सार' की समझ पैदा करना।

हम मुसलिम समाज की कई बहुत पुरानी समस्याओं को दुरुस्त करने की कठिन डगर पर निकले हैं। अगर हम कुछ नहीं बदलेंगे, तो कुछ भी नहीं बदलेगा। रास्ता काफ़ी लम्बा, कठिन और थका देनेवाला है। इसलिए हम अपनी इस कोशिश में देश के सभी लोगों का सहयोग और मदद चाहते हैं।